कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर
होशंगाबाद (म.प्र)

गर्मियों में पशुओं की देखभाल

गर्मी के मौसम में पशुओं को अपने शरीर का तापमान सामान्य बनाएं रखने में काफी दिक्कतें आती हैं। हीट स्ट्रेस के कारण जब पशुओं के शरीर का तापमान 103 डिग्री फेरनहाइट से ज्यादा बढ़ जाता है, तब पशुओं के शरीर में इसके लक्षण दिखने लगते हैं । हीट स्ट्रेस के दौरान गायों में सामान्य तापक्रम बनाए रखने के लिए खनपान में कमी, दुग्ध उत्पादन में 10 से 25 फीसदी की गिरावट, दूध में वसा के प्रतिशत में कमी, प्रजनन क्षमता में कमी, प्रतिरक्षा प्रणाली में कमी आदि लक्षण दिखाई देते हैं। गर्मियों में पशुओं को स्वस्थ रखने एवं उनके उत्पादन के स्तर को सामान्य बनाए रखने के लिए पशुओं की विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है।

प्रमुख रुप से पशुओं पर गर्मी का प्रभाव दो कारणो से होता है –

1. इनवायरमेंटल हीट
2. मेटाबॉलिक हीट

सामान्यत इनवायरमेंटल हीट की अपेक्षा मेटावालिक हीट द्वारा कम गर्मी उत्पन्न होती है, लेकिन जैसे–जैसे दुग्ध उत्पादन और पशु की खुराक बढ़ती है उस स्थिति में मेटाबॉलिज्म द्वारा जो हीट उत्पन्न होती है वह इनवायरमेंटल हीट की अपेक्षा अधिक होती है। इसी वजह से अधिक उत्पादन क्षमता वाले पशुओं में कम उत्पादन क्षमता वाले पशुओं की अपेक्षा गर्मी का प्रभाव ज्यादा दिखाई देता है। इनवायरमेंटल हीट का प्रमुख स्त्रोत सूर्य होता है। अतरू धूप से पशुओं का बचाव करना चाहिए।

गर्मी का पशुओं की शारिरिक क्रियाओं पर प्रभाव –

अपने शरीर के तापमान को गर्मी में भी सामान्य रखने के लिए पशुओं की शारीरिक क्रियाओं में कुछ बदलाव देखने को मिलते हैं।

1. गर्मी के मौसम में पशुओं की स्वशन गति बढ़ जाती है, पशु हांपने लगते हैं, उनके मुंह से लार गिरने लगती है।

2. पशुओं के शरीर में बाइकार्बोनेट आयनों की कमी और रक्त के पी.एच. में वृद्धि हो जाती है।

3. पशुओं के रियुमन में भोज्य पदार्थों के खिसकने की गति कम हो जाती है, जिससे पाच्य पदार्थों के आगे बढने की दर में कम हो जाती है और रियुमन की फर्मेन्टेशन क्रिया में बदलाव आ जाता है।

4. त्वचा की ऊपरी सतह का रक्त प्रभाव बढ़ जाता है, जिसके कारण आंत्रिक ऊतकों का रक्त प्रभाव कम हो जाता है।

5. ड्राय मेटर इंटेक 50 प्रतिशत तक कम हो जाता है, जिसके कारण दुग्ध उत्पादन में कमी आ जाती है।

6. पशुओं में पानी की आवश्यकता बढ़ जाती है।

गर्मियों में इन बातों का रखे ध्यान –

1. पशुओं को दिन के समय सीधी धूप से बचाएं, उन्हें बाहर चराने न ले जाएं।

2. हमेशा पशुओं को बांधने के लिए छायादार और हवादार स्थान का ही चयन करें।

3. पशुओं के पास पीने का पानी हमेशा रखें।

4. पशुओं को हरा चारा खिलाएं।

5. यदि पशुओं में असमान्य लक्षण नजर आते हैं तो नजदीकी पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

6. यदि संभव हो तो डेयरी शेड में दिन के समय कूलर, पंखे आदि का इस्तेमाल करें।

7. पशुओं को संतुलित आहार दें।

8. अधिक गर्मी की स्थिति में पशुओं के शरीर पर पानी का छिड़काव करें।

9. प्रति दुधारू पशु 100ग्राम मीठा सोडा प्रतिदिन के हिसाब से खिलाएं ।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करे

डॉ दिवाकर वर्मा

वैज्ञानिक पशुपालन

कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर

भाऊसाहब भुस्कुटे स्मृति लोक न्यास गोविंदनगर

पलिया पिपरिया, बनखेड़ी, होशंगाबाद (म.प्र)

6264419035